गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, जलगाँव की मासिक पत्रिका; जनवरी, २०२०

बा-बापू१५० १८६९-२०१९

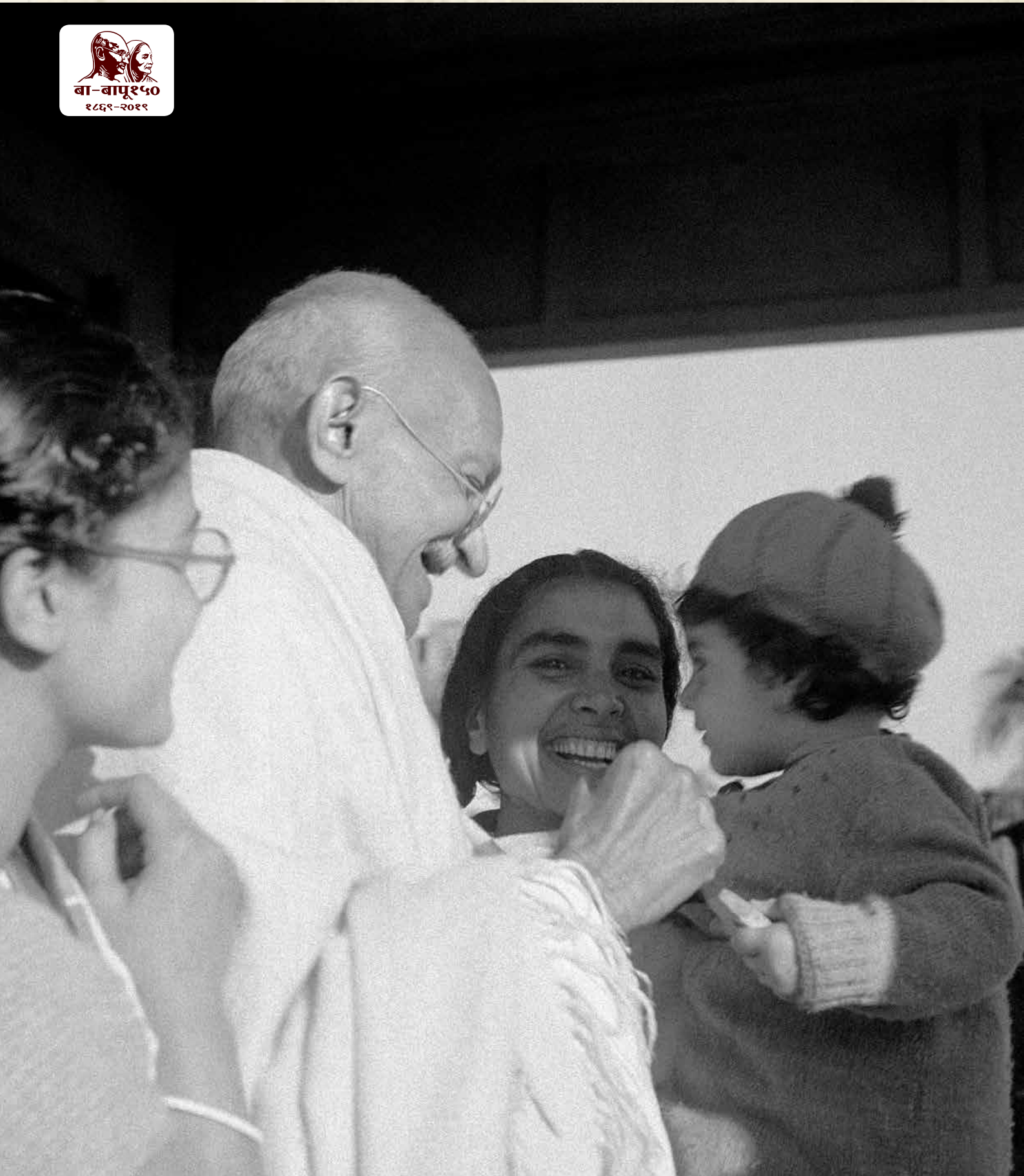

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष–२, अंक १ □ जनवरी, २०२०

सब नियंत्रणों से बढ़कर आत्मनियंत्रण है।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में– ..... पृष्ठ

संपादकीय .....

प्रिटोरिया में पहला दिन १

Contributions by Research Fellows
Social Reform through Gandhi's Nai Talim ३

न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी –

पहली पुण्यतिथि पर उनके जीवन से कुछ विचार स्मरण..... ५

रचनात्मक कार्य और धर्माधिकारी जी का दृष्टिकोण..... ७

Invoking Justice Dharmadhikari's legacy
for the GRF..... ९

गाँधी तीर्थ से – *(डॉ. भवरलाल जी जैन)*..... १०

फाउण्डेशन की गतिविधियां..... १३–१७

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर–सज्जा
योगेश संधानसिवे एवं भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मोबाईल: 9404955272;
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net;
ई–मेल : info@gandhifoundation.net; CIN No.: U73200MH2007NPL169807

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि. जलगाँव– ४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला*

(**पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।*)

मुखपृष्ठ छायाचित्र: महात्मा गाँधी, साथ में आभा गाँधी, डॉ. सुशीला नय्यर, शांतीनिकेतन, दिसम्बर १९४५।

संपादकीय...

नया साल, नई सोच

वाकई में कितने मुद्दे सही मायने में विश्व में बसे अधिकतर लोगों को स्पर्श करते होंगे? मूलभूत जरूरत से संबंधित कुछ वैश्विक मुद्दे सभी को स्पर्श करते होंगे। पर कई मुद्दे ऐसे भी है जो सामान्य व्यक्ति की पहुँच से बाहर हैं। इत्तफाक की बात तो यह है कि विश्व के बड़े समूह को न स्पर्श करने वाले मुद्दों पर चर्चा अधिक होती है। फ्रेन्कोई रेबेल ने बिलकुल ठीक कहा 'आधा विश्व यह जानता नहीं है, कि दूसरा आधा विश्व कैसे गुजारा करता है।'

सबसे गंभीर बात तो यह है, कि कई सारे मुद्दों की आड़ में मूलभूत मुद्दे दब जाते हैं। UN Chronical जर्नल के अनुसार विश्व में हर साल भूख और कुपोषण के कारण मरने वाले लोगों की संख्या पच्चीस हजार है और इसमें दस हजार तो बच्चे हैं। यह संख्या थोड़ी पुरानी है, परंतु उम्मीद करते हैं इसमें बढ़ोतरी नहीं हुई होगी। यहाँ तक की जिसे हम गंभीर समझते है वैसे रोग या स्थिति जैसे एचआईवी एड्स और मलेरिया से मरने वालों की संख्या से भी यह ज्यादा है। भूख और कुपोषण सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए अधिक खतरा है। यह युद्ध की स्थिति से भी अधिक खतरनाक माना जाता है।

अब दूसरी स्थिति को समझने का प्रयास करते हैं। हमें आज भी यह समझने की जरूरत है कि राष्ट्र को खतरा दूसरे राष्ट्र से नहीं बल्कि आंतरिक घटकों या व्यवस्था से है। हमारे इर्दगिर्द बसे राष्ट्र को हमने दुश्मन मान लिया है, उसी तरह दूसरे राष्ट्र का भी रवैया है। इस विश्व में एक दूजे के पड़ोस में रहने वाले कितने राष्ट्र हैं जहाँ उन दोनों के बीच भाईचारे की भावना व अमन दिखाई देता हो? और कितने राष्ट्र ऐसे हैं जो एक दूसरे के पड़ोसी है फिर भी दुश्मन की तरह सीना तान कर एक दूसरे पर प्रहार करने का एक भी मौका नहीं छोड़ते? ऐसे दो तरह की सूची तैयार करेंगे तो पता चलेगा की पहले से दूसरी सूची लंबी हो रही है। एक कड़वा सत्य यह भी है कि हर एक देश में या विश्व में हर साल होने वाले मृत्यु के कारण में इस दुश्मनी भरा रवैया नहीं बल्कि वह राष्ट्र की खुद की व्यवस्था, आरोग्य व मूलभूत जरूरत की कमी के कारण होने वाले मृत्यु अधिक कारण बने हुए हैं। इस अर्थ में हर एक राष्ट्र को सबसे बड़ा खतरा किसी दूसरे राष्ट्र से नहीं बल्कि खुद की अव्यवस्था से है। यह तो 'दीया तले अँधेरा' जैसी बात हो गई! अगर हर एक राष्ट्र अपने को आंतरिक रूप से मजबूत करेंगे तो यह विश्व एक बेहतर जगह बन जाएगी। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक डॉ. भवरलालजी जैन का जीवन मंत्र याद आ जाता है, "Leave this world better than you found it'.

२०२० का आरंभ हो चुका है। आइए, नए साल में एक ऐसा विश्व बनाने की कोशिश करते हैं जिसमें आपसी सहयोग की भावना प्रबल हो और आंतरिक व्यवस्था शाश्वत हो। कहीं ऐसा ना हो कि साल तो नया आ गया है और हमारी सोच पुरानी?

हमारे सभी पाठकों को नए साल की हार्दिक बधाई। इस अंक में गाँधीजी की आत्मकथा से अगला प्रकरण, फाउण्डेशन के रिसर्च फैलो ऋषिकेश किर्तिकर का एक लेख, न्या. धर्माधिकारी जी की पहली पुण्यतिथि पर उनके विचारों को समर्पित अश्विन झाला, डॉ. सुगन बरंठ तथा अंबिका जैन का एक–एक लेख, फाउण्डेशन के संस्थापक भवरलालजी जैन का गाँधी तीर्थ के पीछे की भूमिका तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां साझा कर रहे हैं।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

सत्य के प्रयोग

- मोहनदास करमचंद गाँधी

प्रिटोरिया में पहला दिन

*'**खोज गाँधीजी की**' के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। गाँधीजी जब प्रिटोरिया पहुँचे उस गाथा को दर्शाता हुआ प्रस्तुत है आत्मकथा से अगला प्रकरण।*

– संपादक

मुझे आशा थी कि प्रिटोरिया पर दादा अब्दुल्ला के वकील की ओर से कोई आदमी मुझे मिलेगा। मैं जानता था कि कोई हिन्दुस्तानी तो मुझे लेने आया ही न होगा, और किसी भी हिन्दुस्तानी के घर न रहने के वचन से मैं बँधा हुआ था। वकील ने किसी आदमी को स्टेशन पर भेजा न था। बाद में मुझे पता चला कि मेरे पहुँचने के दिन रविवार था, इसलिए थोड़ी असुविधा उठाये बिना वे किसी को भेज नहीं सकते थे। मैं परेशान हुआ। सोचने लगा कहाँ जाऊँ? डर था कि कोई होटल मुझे जगह न देगा। सन् १८९३ का प्रिटोरिया स्टेशन १९१४ के प्रिटोरिया स्टेशन से बिलकुल भिन्न था। धीमी रोशनीबाली बत्तियाँ जल रही थीं। यात्री भी अधिक नहीं थे। मैंने सब यात्रियों को जाने दिया और सोचा कि टिकट कलेक्टर को थोड़ी फुरसत होने पर अपना टिकट दूँगा और यदि वह मुझे किसी छोटे-से होटल का या ऐसे मकान का पता देगा तो वहाँ चला जाऊँगा, या फिर रात स्टेशन पर ही पड़ा रहूँगा। इतना पूछने के लिए भी मन बढ़ता न था, क्योंकि अपमान होने का डर था।

स्टेशन खाली हुआ। मैंने टिकट-कलेक्टर को टिकट देकर पूछताछ शुरू की। उसने सभ्यता से उत्तर दिये, पर मैंने देखा कि वह मेरी अधिक मदद नहीं कर सकता था। उसकी बगल में एक अमेरिकन हब्शी सज्जन खड़े थे। उन्होंने मुझसे बातचीत शुरू की:

''मैं देख रहा हूँ कि आप बिलकुल अजनबी हैं और यहाँ आपका कोई मित्र नहीं है। अगर आप मेरे साथ चलें, तो मैं आपको एक छोटे-से होटल में ले चलूँगा। उसका मालिक अमेरिकन है और मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। मेरा खयाल है कि वह आपको टिका लेगा।''

मुझे थोड़ा शक तो हुआ, पर मैंने इन सज्जन का उपकार माना और उनके साथ जाना स्वीकार किया। वे मुझे जॉन्स्टन के फेमिली होटल में ले गए। पहले उन्होंने मि. जॉन्स्टन को एक ओर ले जाकर थोड़ी बात की। मि. जॉन्स्टन ने मुझे एक रात के लिए टिकाना कबूल किया, और वह भी इस शर्त पर कि भोजन मेरे कमरे में पहुँचा देंगे।

मि. जॉन्स्टनने कहा, ''मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे मन में काले-गोरे का कोई भेद नहीं है, पर मेरे ग्राहक सब गोरे ही हैं। यदि मैं आपको भोजन गृह में भोजन कराऊँ, तो मेरे ग्राहक बुरा मानेंगे और शायद वे चले जायेंगे।''

मैंने जवाब दिया, ''आप मुझे एक रात के लिए रहने दे रहे हैं, इसे भी मैं आपका उपकार मानता हूँ। इस देश की स्थिति से मैं कुछ कुछ परिचित हो चुका हूँ। मैं आपकी कठिनाई को समझ सकता हूँ। मुझे आप खुशी से मेरे कमरे में खाना दीजिये। कल तक मैं दूसरा प्रबंध कर लेने की आशा रखता हूँ।

मुझे कमरा दिया गया। मैंने उसमें प्रवेश किया। एकान्त मिलने पर भोजन की राह देखता हुआ मैं विचारों में डूब गया। इस होटल में अधिक यात्री नहीं रहते थे। कुछ देर बाद भोजन के साथ वेटर को आता देखने के बदले मैंने मि. जॉन्स्टन को देखा। उन्होंने कहा, ''मैंने आपको कमरे में खाना देने की बात कही थी। पर मैंने उसमें शरम महसूस की, इसलिए अपने ग्राहकों से आपके विषय में बातचीत करके

उनकी राय जानी। आप भोजनगृह में बैठकर भोजन करें, तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। इसके अलावा, आप यहाँ जितने दिन भी रहना चाहें रहें, उनकी ओर से कोई रुकावट नहीं होगी। इसलिए अब आप चाहें तो भोजन-गृह में आइए और जब तक जी चाहे यहाँ रहिए।''

मैंने फिर उनका उपकार माना और मैं भोजन-गृह में गया। निश्चिंत होकर भोजन किया।

दूसरे दिन सबेरे में वकील के घर गया। उनका नाम था, ए. डब्ल्यू. बेकर। उनसे मिला। अब्दुल्ला सेठ ने मुझे उनके बारे में कुछ बता दिया था। इसलिए हमारी पहली मुलाकात से मुझे कोई आश्चर्य न हुआ। वे मुझसे प्रेमपूर्वक मिले और मेरे बारे में कुछ बातें पूछीं, जो मैंने उन्हें बतला दीं। उन्होंने कहा, ''बारिस्टर के नाते तो आपका यहाँ कोई उपयोग हो ही न सकेगा। इस मुकदमे के लिए हमने अच्छे-से-अच्छे बारिस्टर कर रखे हैं। मुकदमा लम्बा है और गुत्थियों से भरा हुआ है। इसलिए आपसे मैं आवश्यक तथ्य आदि प्राप्त करने का ही काम ले सकूँगा। पर इतना फायदा अवश्य होगा कि अपने मुवक्किल के साथ पत्र-व्यवहार करने में मुझे अब आसानी हो जायगी, और तथ्यादि की जो जानकारी मुझे प्राप्त करनी होगी, वह मैं आपके द्वारा मँगवा सकूँगा। आपके लिए अभी तक मैंने कोई मकान तो तलाश नहीं किया है। सोचा था कि आपको देखने के बाद खोज लूँगा। यहाँ रंगभेद बहुत है इसलिए घर मिलना आसान नहीं है। पर मैं एक बहन को जानता हूँ। वह गरीब है, भटियारे की स्त्री है। मेरा खयाल है कि वह आपको टिका लेगी। उसे भी कुछ मदद हो जायगी। चलिये, हम उसके यहाँ चलें।''

यों कहकर वे मुझे वहाँ ले गए। मि. बेकर ने उस बहन को एक ओर ले जाकर उससे कुछ बातें कीं, और उसने मुझे टिकाना स्वीकार किया। हप्ते के पैंतीस शिलिंग देने का निश्चय हुआ।

मि. बेकर वकील थे और कट्टर पादरी भी थे। वे अभी जीवित हैं, और आजकल केवल पादरी का ही काम करते हैं। वकालत उन्होंने छोड़ दी है। रुपये-पैसे से सुखी हैं। उन्होंने मेरे साथ अब तक पत्र-व्यवहार जारी रखा है। पत्रों का विषय एक ही होता है। वे अपने पत्रों में अलग-अलग ढंग से ईसाई धर्म की उत्तमता की चर्चा करते हैं, और इस बात का प्रतिपादन करते हैं कि ईसा को ईश्वर का एकमात्र पुत्र और तारनहार माने बिना परम शांति नहीं मिल सकती।

हमारी पहली ही मुलाकात में मि. बेकर ने धर्म-संबंधी मेरी मन:स्थिति जान ली। मैंने उन्हें बता दिया: ''मैं जन्म से हिंदू हैं। इस धर्म का भी मुझे अधिक ज्ञान नहीं है। दूसरे धर्मों का ज्ञान भी कम ही है। मैं कहाँ हूँ, क्या मानता हूँ, मुझे क्या मानना चाहिए, यह सब मैं नहीं

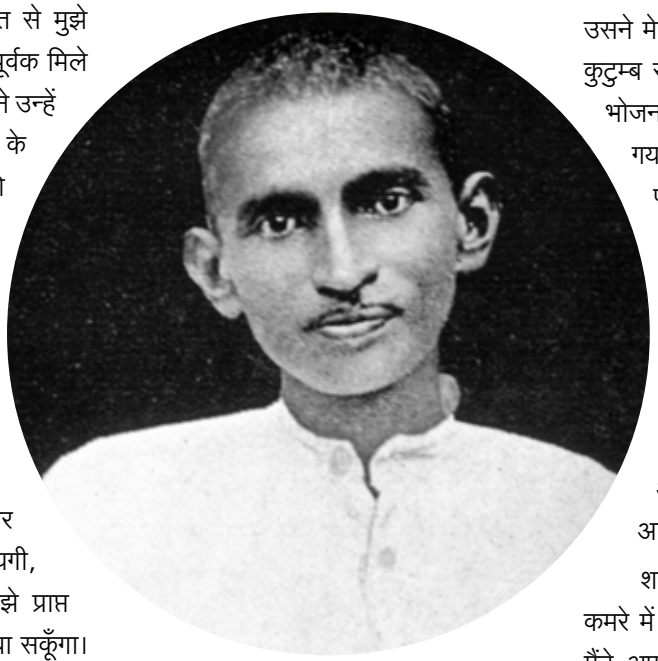

जानता। अपने धर्म का अध्ययन मैं गंभीरता से करना चाहता हूँ। दूसरे धर्मों का अध्ययन भी यथाशक्ति करने का मेरा इरादा है।''

यह सब सुनकर मि. बेकर खुश हुए और बोले, ''मैं स्वयं 'साउथ अफ्रीका जनरल मिशन' का एक डायरेक्टर हूँ। मैंने अपने खर्च से एक गिरजाघर बनवाया है। उसमें समय-समय पर धर्म संबंधी व्याख्यान दिया करता हूँ। मैं रंगभेद को नहीं मानता। मेरे साथ काम करनेवाले कुछ साथी भी हैं। हम प्रतिदिन एक बजे कुछ मिनट के लिए मिलते हैं और आत्मा की शांति तथा प्रकाश (ज्ञान के उदय) के लिए प्रार्थना करते हैं। उसमें आप आयेंगे, तो मुझे खुशी होगी। वहाँ मैं अपने साथियों से भी आपकी पहचान करा दूँगा। वे सब आपसे मिलकर प्रसन्न होंगे और मुझे विश्वास है कि उनका समागम आपको भी अच्छा लगेगा। मैं आपको कुछ धार्मिक पुस्तकें भी पढ़ने के लिए दूँगा, पर सच्ची पुस्तक तो बाइबल ही है। मेरी सलाह है कि आप उसे अवश्य पढ़िये।''

मैंने मि. बेकर को धन्यवाद दिया और अपने बसभर रोज एक बजे उनके मंडल में प्रार्थना के लिए पहुँचना स्वीकार किया।

''तो कल एक ही बजे यहीं आइयेगा। हम साथ ही प्रार्थना-मंदिर चलेंगे।''

हम जुदा हुए। अधिक विचार करने की अभी मुझे फुरसत नहीं थी। मैं मि. जॉन्स्टन के पास गया। बिल चुकाया। नये घर में पहुँचा। वहाँ भोजन किया। घर-मालकिन भली स्त्री थी। उसने मेरे लिए अन्नाहार तैयार किया था। इस कुटुम्ब से घुलमिल जाने में मुझे देर न लगी। भोजन से निबटकर मैं उन मित्र से मिलने गया, जिनके नाम दादा अब्दुल्ला ने मुझे पत्र दिया था। उनसे जान-पहचान हुई। हिन्दुस्तानियों की दुर्दशा की विशेष बातें उनसे जानने को मिलीं। उन्होंने मुझसे अपने घर रहने का आग्रह किया। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और मेरे लिए जो व्यवस्था हो चुकी थी उसकी बात कही। उन्होंने मुझसे आग्रहपूर्वक कहा कि जिस चीज की आवश्यकता हो, मैं उनसे माँग लूँ।

शाम हुई। ब्यालू की और मैं तो अपने कमरे में जाकर विचारों के चक्कर में पड़ गया। मैंने अपने लिए तुरंत कोई काम नहीं देखा। अब्दुल्ला सेठ को इसकी सूचना भेज दी। मि. बेकर की मित्रता का क्या अर्थ हो सकता है? उनके धर्मबंधुओं से मुझे क्या मिल सकेगा? ईसाई धर्म का अध्ययन मुझे किस हद तक करना चाहिए? हिंदू धर्म का साहित्य कहाँ से प्राप्त किया जाये? मैं एक ही निर्णय कर सका: मुझे जो भी पढ़ने को मिले, उसे मैं निष्पक्ष भाव से पढ़ूँ और मि. बेकर के समुदाय को, भगवान जिस समय जो सुझा दे, सो जवाब दूँ। जब तक मैं अपने धर्म को पूरी तरह समझ न लूँ, तब तक मुझे दूसरे धर्मों को अपनाने का विचार नहीं करना चाहिए। इस तरह सोचता हुआ मैं निद्रावश हो गया।

-'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार,
पृष्ठ क्र. १०७-११०,
क्रमश:

Contributions by Research Fellows

Social Reform through Gandhi's Nai Talim

GRF Residential Research Fellowship Program caters annually to 4-6 scholars, activists, social workers, or public figures who conduct intensive applied research during a period of 3-6 months to underscore the relevance of Gandhian solutions for tackling contemporary problems and crises.

This new column will present selected contributions from the fellows as well as their findings.

Rushikesh Kirtikar is a Ph.D. Researcher in Education from Tata Institute of Social Sciences, Mumbai and also a Residential Research Fellow at the Gandhi Research Foundation, Jalgaon, pursuing his research under the guidance of Prof. Gita Dharampal, on Work-centric Education whereby he has selected Gandhi's Nai Talim School at Sevagram, focusing on its teaching-learning practices based on productive work.

- Editor

Mahatma Gandhi, who is recognised as a national leader of the Indian Independence movement, also presented his thoughts on education extensively in his writings. His thoughts emerged from his experiments on education with his own children and children at the Tolstoy farm in South Africa, and subsequently, after 1915, by his analysis of the problems and needs of the Indian population on the subcontinent. These thoughts on education which later became popularly known as 'Nai Talim' or 'Basic Education' were formally discussed in the Wardha Education Conference on 22 – 23 Oct. 1937 with the aim of thereby providing the fundamental basis for the National Education system for an independent India.

Nai Talim emerged due to the discontent with then contemporary colonial education system which focused on achieving competency in the three Rs, namely Reading, Writing and Arithmetic. Notably, its aim was to prepare the Indian youth simply for clerical jobs. Gandhi recognised this narrow approach to education and clearly displayed his objection to it. He realised its destructive nature that disconnected the child from his home background and disabled him for any kind of productive work in the future.

Gandhi proposed an alternative in the form of Nai Talim and called it 'Education through life' and 'for life'. According to him an education for life should be holistic in nature in order to facilitate the development of the intellectual, physical as well as the spiritual faculties of a child, using the 3 Hs, namely the Head, Hands and Heart. Education through life means that the child learns through getting involved in real life activities and not just being restricted to classroom teaching or books. Therefore, Gandhi proposed that all education should be given through some kind of vocational or productive work called 'crafts' such as spinning, weaving, agriculture, carpentry, cooking, etc. Through engaging in these crafts, Gandhi illustrated how the child would not only learn the respective vocations, but would also gain knowledge of arithmetic, science, geography, history and economics. He would learn about community living and working cooperatively towards meeting the daily requirements of life in tune with the principle of non-violence.

For Gandhi, Nai Talim was not just an education for the child's development. It was also a tool for village upliftment and a medium of larger social reform. Gandhi's idea of Village Swaraj was blended with education; he was against separating village upliftment into water-tight

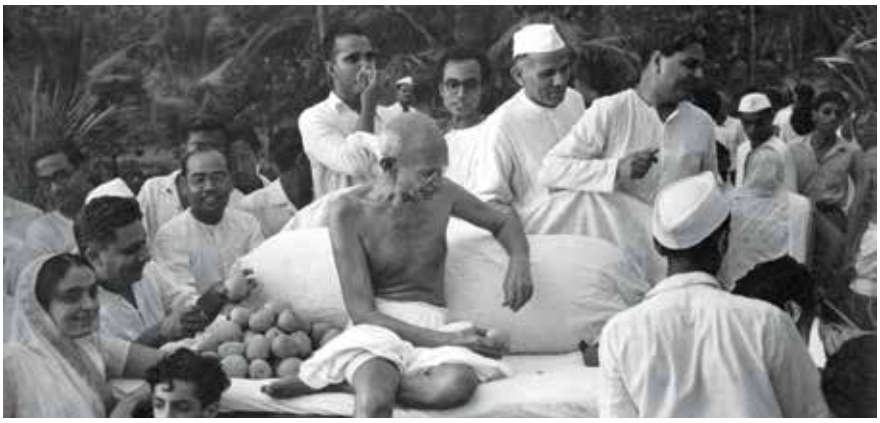

Mahatma Gandhi distributing mangoes to children after prayer at Juhu Beach, Bombay, May/June 1944. Left: Gandhi's hostess, Sumati Morarjee.

compartments. The life of the student in Nai Talim was to be closely connected with the needs and problems of the community, so that the student could become an active citizen who received education by working towards these local needs and problems. According to Gandhi, this would promote the self-reliance of villages in a multi-dimensional way.

Reviving Nai Talim today

Nai Talim could not survive in India for long due to challenges at various levels, such as lack of socio-political support and problems in implementing the core learning principles of Nai Talim. If we want to revive Nai Talim today, it needs to be contextualised according to the present needs of the society. There are a few schools which are already adopting its principles to a certain extent. Vigyan Ashram in Pabal village of Maharashtra is one such institution inspired by Nai Talim which aims at using science and technology to address village problems through offering a one-year Diploma course in Rural Technology. It also attempts to integrate such education in a large number of schools through part-time involvement. The students design equipment, machines and infrastructure for agricultural needs, make processed food and learn all the practical knowledge involved. 'We the people' is another organisation in Pune that aims to provide civic education to school children by following an 'Education through life' approach. It teaches children how they can use their constitutional rights to raise community issues by approaching the local government authorities. For instance, school children formally approached authorities to get street lights repaired, have school compound walls built under RTE, get zebra crossings placed on roads and similar other initiatives by researching into the specific problems, studying policies and finding solutions through advocacy, and simultaneously, in the process, receiving practical civic education.

Anand Niketan school in Sewagram is one of the first Nai Talim school that is trying to provide formal education while still adopting the Nai Talim approach. A lot of experiments are needed in this direction for strengthening the teaching-learning practices of Nai Talim.

When India is confronted with a range of issues such as unemployment and a lack of skills, inadequacies in health and sanitation, addiction, infant mortality, female foeticide, water scarcity and many more, today presents an ideal opportunity to use the immense potential of education like that of Nai Talim to bring about the required change. There is already a growing dissatisfaction among the present generation with the current education system, and increasing unemployment among the youth is fuelling its unused energy and slowly converting it into rage. There does not seem to be a better time to start experimenting on an alternative form of education.

The Gandhi Research Foundation has started its work in rural development under the Ba Bapu 150 project whereby education is an important element. There are numerous other organisations working on rural development as well as on urban issues. Instead of focusing on dealing with problems through independent programmes, a more viable approach of addressing these issues through education should be experimented with so that finding solutions to problems becomes integrated in the school curriculum itself. A simple initiative of planting and nurturing at least one tree in the community per month by each school child as part of the curriculum can contribute towards a single school planting a thousand trees annually. For the child it becomes a learning opportunity to understand the growth of plants and botanical science, natural environment's association with geography and climatic conditions, the relevance of trees in the context of climate change, and many similar domains of knowledge. This approach would enable the child to nurture an attitude of care and responsibility towards the environment. In this manner the child's own growth would run parallel to the growth of plants she planted. All that is needed to initiate this development, is to facilitate the emergence of innovative ideas by community organisations and the enthusiastic participation by schools.

At a time when Nai Talim is not yet formally recognised by the government, we need such small steps to be able to sow the seeds of Nai Talim. Once communities gradually begin to witness their power of social change, it would not take long for such education to gradually grow roots in the country. Since the top-down approach has already failed with Nai Talim, it is the responsibility of schools and other community organisations to experiment with a bottom-up approach. For this we need to develop the perspective that community problems can be addressed through schools and other education institutions, and to realise that education is not restricted within the school compound alone. Each child and every school has the potential to bring about crucial community reforms. This is a perspective that still seems to be missing in the development practices of the country. Nelson Mandela has called education the biggest tool for social change; it is time we realise this immense power of education in everyday life.

Rushikesh Kirtikar,

Research Fellow,
Gandhi Research Foundation

अंतरराष्ट्रीय महिला सम्मेलन को संबोधित करते हुए न्या. धर्माधिकारी जी, अक्तूबर २०१६

न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी

पहली पुण्यतिथि पर उनके जीवन से कुछ विचार स्मरण

वरिष्ठ गाँधीजन न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी आज से करीब एक साल पहले हमारे बीच से विदा हो चुके है। स्त्रियों के अधिकार का समर्थन करने वाले, अंतिम जन को न्याय देने वाले, गाँधी विचार आधारित समाज निर्माण के बारे में स्पष्ट समझ रखने वाले एक व्रतनिष्ठ व्यक्ति थे। उनका जीवन उसी के लिए था और वे उसी के लिए जीए। उनकी पहली पुण्यतिथि पर उनके जीवन के कुछ संस्मरण तथा विचार आपके साथ साझा कर रहे हैं।

– संपादक

एक टीवी कार्यक्रम 'सत्यमेव जयते' के दौरान आमीर खान ने धर्माधिकारी जी का इंटरव्यू लिया था। उस मुलाकात से पहले धर्माधिकारी जी को परिचय देने के लिए कहा गया, उन्होंने कहा कि ''मैं परिचय के बहुत खिलाफ हूँ। मेरे व्यक्तित्व पर पहला लेबल लगा की मैं हिंदू हूँ, दूसरा लगा ब्राह्मण हूँ, तीसरा लगा मैं देशस्थ ब्राह्मण हूँ, चौथा लेबल है धर्माधिकारी, मैंने जो पढ़ाई की उसके लेबल हैं, न्यायमूर्ति बना उसका लेबल है, जो पुरस्कार प्राप्त हुए उनके लेबल हैं। मेरी कठिनाई यह है कि मेरे व्यक्तित्व पर जो लेबल लगे हैं वे लेबल ही लेबल दिखते हैं और धर्माधिकारी कहीं गुम हो गए है। जबकि मैं धर्माधिकारी को गुम नहीं होने देना चाहता।'' उनसे जुड़े हर एक व्यक्ति यह कह सकता है कि उन्होंने कभी धर्माधिकारी को गुम नहीं होने दिया। सिद्धांत के प्रति कभी समझौता नहीं किया। आप जीवन के आखिरी सांस तक सिद्धांत व मूल्य आधारित जीवन जीते रहे। हमें बेहद गर्व हो रहा है हम गाँधी विचार की विरासत को संजो कर भावी पीढ़ी को संस्कारित करने वाले एक दिव्य प्रकाश की आभा में रहे हैं।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन की नींव

अपनी उम्र के आखिरी पड़ाव में धर्माधिकारी जी किसी भी संस्था के पद की जिम्मेदारी नहीं लेते थे, उनमें अपवाद रूप गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन है। बात कुछ ऐसी है की १९९२ में उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ में पहला दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ था। उसी समारोह में दीक्षांत भाषण देने के लिए न्या. धर्माधिकारी जी उपस्थित थे। तब उन्होंने खानदेश की सारी खासियतों का उल्लेख करते हुए यह कहा था कि अगर जलगाँव में गाँधी विचार जीवित हो सके तो खानदेश में एक और खासियत जुड़ जाएगी। उसी समय भवरलालजी जैन (बड़े भाऊ) ने इसको मान लिया। और गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन का आरंभ हुआ।

भाऊ अपने दीर्घदृष्टि के कारण इस संस्था की गरिमा को समझते व मानते थे, 'कि मैंने अपने जीवन में गाँधीजी के अनुयायी जैसा जीवन नहीं जिया, इसलिए इस संस्था के अध्यक्ष की सूची में से मैं अपने आपको अलग करता हूँ।' वे न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी के पास गये उनको बिनती की कि आप इस संस्था के अध्यक्ष के रूप में हमारा मार्गदर्शन करें।

धर्माधिकारी जी ने कहा, देखो भवरलाल जी अब मेरी उमर तो आप से भी ज्यादा हो गई है और अब मैं एक-एक कर संस्था छोड़ रहा हूँ, और छोड़ना चाहता हूँ और आप बोल रहे हैं कि मेरी संस्था का यह पद स्वीकार कीजिए। पर आपको नहीं भी कैसे बोलूँ, मेरे सामने यह समस्या है। तो चलो, आखिरी का यह पद मैं स्वीकार करता हूँ। इस तरह न्या. धर्माधिकारी जी गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के पहले अध्यक्ष बने और फाउण्डेशन के लिए यह एक ऐतिहासिक घटना बनी।

बा-बापू १५० का मंत्र

धर्माधिकारी जी के सुझाव से ही गाँधीजी की १५०वीं जन्म जयंती जो केवल गाँधीजी की ही नहीं बल्कि कस्तूरबा की भी जयंती है, को एक-साथ मनाया जाता है। इस सुझाव पर फाउण्डेशन ने बा-बापू१५० के रूप में जयंती मनाने का निर्णय लिया। बाद के दिनों में धर्माधिकारी जी के सुझाव से राष्ट्रीय स्तर की कई संस्थाओं ने बा-बापू १५० जयंती मनाने का निर्णय लिया। इस सुझाव में धर्माधिकारी जी का महिलाओं के प्रति केवल आदर भाव ही नहीं बल्कि जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ने

फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित गाँधी पोस्टकार्ड का विमोचन करते हुए धर्माधिकारी जी, भवरलालजी जैन तथा अन्य गणमान्य

फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं से संवाद करते हुए धर्माधिकारी जी एवं डॉ. सुदर्शन आयंगार, गाँधी तीर्थ, जलगाँव

की प्रचंड क्षमता का दर्शन दिखाई देता है। स्त्री विमर्श के संदर्भ में उनकी धरोहर एक सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण की दिशा में महत्त्वपूर्ण रही है। बा–बापू१५० कार्यक्रम में उनकी झलक मिलती है।

बा–बापू १५० कार्यक्रम के अंतर्गत शाश्वत विकास की परिभाषा का एक स्पष्ट चित्र धर्माधिकारी जी ने हमारे सामने खीच कर रखा है। वे कहते थे कि गाँधीजी की आर्थिक योजना की कल्पना पानी में उठने वाले वलय जैसी है। पानी में कंकर डालते ही छोटे घेरे बनते हैं। फिर वही घेरे बड़े और बड़े बनते जाते हैं। इसलिए पहले गृहोद्योग, फिर ग्रामोद्योग, बाद में लघुद्योग, और अंत में राष्ट्रीय बड़े उद्योग। इस तरह से विकेंद्रित व्यवस्था को कायम करते हुए आर्थिक स्थिरता को बरकरार रखने वाले एक अर्थ व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं। गाँधीजी के रचनात्मक कार्य से धर्माधिकारी जी भलीभाँति परिचित थे वे गाँधीजी के स्वप्नों के गाँव के अंतर्गत देश में ऐसे गाँव भी निर्माण किए जाने चाहिए जहाँ गाँधीजी के समग्र विकास की परिभाषा दिखायी देती हो। इसी बदौलत बा–बापू१५० के अंतर्गत रचनात्मक कार्य का चित्र स्पष्ट रूप में दिखाई दे रहा है। गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन इसी रचनात्मक दृष्टिकोण से भारत के चौदह राज्यों के १५० गाँवों में कार्य करने का संकल्प लिया है। इसकी ठोस एवं मजबूत शुरुआत महाराष्ट्र के २२ गाँवों से हो चुकी है।

युवाओं के बीच लगाव

धर्माधिकारी जी गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के अध्यक्ष होने के नाते हमारा सौभाग्य रहा की उनके साथ कई बार गुफ्तगू करने का मौका मिला। कई गुफ्तगू में गाँधी विचार के प्रति उनकी दीर्घ समझ जैसे साधन शुद्धि, शुचिता, अनुशासन, व्रत निष्ठता से हमारी टीम को पोषण युक्त पदार्थ पाठ मिले हैं। वे युवाओं के बीच संवाद करने से कभी थकते नहीं थे। युवा हमारे राष्ट्र का भविष्य है इन्हें सुसंस्कारित करने की जिम्मेदारी के रूप में वे खुद को देखते थे। इसलिए गाँधी तीर्थ में आयोजित कई कार्यक्रमों के दौरान वे युवाओं से संवाद करने का एक भी मौका नहीं छोड़ते थे। वे कहते थे कि लकीर के फकीर बनने की बजाए समय के गर्भ में छिपी आकांक्षाएं एवं आवश्यकताएं पहचान कर इस देश को तथा समाज को उचित दिशा में मोड़ने की नम्र इच्छा और क्षमता तथा पुरुषार्थ जिनमें है ऐसी वस्तुनिष्ठ, समयज्ञ तथा ध्येयपरायण युवा पीढ़ी की आवश्यकता है। लोग कई बार कहते हैं कि नई पीढ़ी बिगड़ गई है, ऐसा कहने वाले लोगों के प्रति वे नम्रतापूर्वक कहते थे कि हमारी पीढ़ी ही फेल हो गई, नापास हो गई है। बिगड़े बच्चे नहीं होते, बल्कि उनके मां–बाप होते हैं। ऐसे कई संवाद में वे युवाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते थे। युवाओं के बीच में गाँधी मूल्यों के फैलाव में उन्होंने जो संपन्नता लाई उनके लिए वे हमेशा याद किए जाएंगे।

इनके व्यक्तित्व में पाठकों को विभिन्न तरह के नैतिक प्रभावों का अंतःदर्शन होता है, जिन्होंने धर्माधिकारी जी के व्यक्तित्व को संवारा और रूपायित किया। आपके विशाल दृष्टिकोण एवं चिंतन धारा की गुणवत्ता का यथासंभव पूर्णरूपेण चित्रण करना कठिन है। किसी एक व्यक्ति में इतनी सामर्थ्य कैसे हो सकती है? धर्माधिकारी जी के इसी शुभ संस्कार का बीज उनके बचपन में दिखाई देता है। वे कहते थे कि महात्मा गाँधी नाम का आदमी था वह मेरे कंधे पर हाथ रखकर चार–पाँच बार घूमने गया है। इसलिए जिंदगी में इस कंधे पर बहुत शक्ति आई है, यह कभी झुका नहीं है। इसी तरह महात्मा गाँधी के पास से आत्मसात किया हुआ आत्मबल के प्रकाश से सत्य और अहिंसा के मार्ग के द्वारा धर्माधिकारी जी नैतिक राष्ट्र का नेतृत्व करते रहे।

धर्माधिकारी जी तत्त्वनिष्ठ, दातृत्व, सज्जनता और विवेकशीलता का बड़ा मनोरम संगम थे। संसार में साहसी, व्रतनिष्ठता, संपन्नता और शुचिता के पुजारी विरले ही पाये जाते हैं, उनमें से धर्माधिकारी जी एक थे। अपनी वाणी, वर्तन और कर्म के द्वारा वे हमारे बीच हमेशा जिंदा रहेंगे।

– अश्विन झाला
संपादक, 'खोज गाँधीजी की' गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

◆◆◆

न्या. धर्माधिकारी जी भावी पीढ़ी को संस्कारित करने के उद्देश्य से जीवन के अंतिम पड़ाव तक सक्रिय रूप से कार्यरत रहे।

दीप प्रज्वलन कर रचनात्मक कार्यकर्ता शिविर का आरंभ करते हुए न्या. धर्माधिकारी जी, भवरलालजी जैन, डॉ. सुगन बरंठ तथा अन्य गाँधीजन, वाकोद गाँव, २००७

रचनात्मक कार्य
और धर्माधिकारी जी का दृष्टिकोण

पद्मविभूषण पूर्व न्यायमूर्ति एवं गाँधी विचारों के चिंतक, लेखक, भाष्यकार एवं सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में श्री चंद्रशेखर धर्माधिकारी जी जाने जाते थे और जाने जाते रहेंगे। पहली बात वे दूसरे अनेक गाँधीजनों की तरह यही कहते थे की जीवन समग्र होता है उसके किसी एक पहलू की विशेषता को लेकर उसे दर्शाया नहीं जा सकता।

एलॉपथी एक्टिव इन्ग्रेडीयंट को पदार्थ में ढूंढकर उसी से प्रयोग कर व्यक्ति को होनेवाली तकलीफ पर निजात पाने का विज्ञान है। जैसे यष्टिमधु में लिकोरिस नामक द्रव्य यह एक्टिव इन्ग्रेडीयंट (महत्वपूर्ण हिस्सा) निकालकर उसका स्वर यंत्र या फेंफडो से संबंधित बीमारियों पर इलाज ढूंढा गया पर परिणाम इच्छित न आ सके। किंतु यष्टिमधु के उपयोग से ये बीमारियाँ तो दूर होती पाई गई हैं। उसे संपूर्णता में लेकर क्या होता है तथा उसके परिणाम क्यों और कैसे आते है इस पर भी विपुल संशोधन हुआ। इससे साबित हुआ कि किसी चीज को उसके पूर्णांश में लेकर ही काम होता है वैसे ही जीवन मूल्यों का भी है। व्यक्ति के संपूर्ण जीवन मूल्य ही देखने होते हैं। उसके एक अंश को लेकर व्यक्ति पूर्ण समझ नहीं आता। धर्माधिकारी जी ने पुनः स्मरण करा दिया कि जीवन को समग्रता से देखने का मुद्दा है, इसलिए लिख रहा हूँ कि रचनात्मक कार्य के प्रति उनके दृष्टिकोण को हम उनके पूरे जीवन और कथन को देखकर ही समझें।

दूसरी बात उन्होंने हमेशा कहा कि मैं कोई नई चीज नहीं कहा रहा हूँ। गत २०० वर्ष की दुनिया के संदर्भ में भारत की ही बात करें तो, ये सारी बातें महात्मा फुले से लेकर महात्मा गाँधी तक हुए सभी महापुरुषों में आप देख पाएंगे, उन सभी के लेखन में, चिंतन में और कृतियों में भी यह बात दिखाई देगी।

धर्माधिकारी जी की दृष्टि से अर्थात् गाँधी नजरिये से रचनात्मक काम के साथ भी यह देखना होगा की वह किस लिए है? उसका लक्ष्य क्या है? और उसका उद्देश्य क्या है? अगर लक्ष्य स्पष्ट न हो तो वह सेवा का काम होगा या रचनात्मक काम का चोला पहने हिंसक काम भी हो सकेगा। ये दोनों बातें समाज में हमेशा से होती रही हैं। इन दोनों की समाज में प्रशंसा भी बहुत होती दिखाई देती हैं अगर लोगों को तात्कालिक लाभ होते हैं तो वे उन्हें अच्छे काम के रुप में देखते भी हैं। उसे मानवता का काम भी कहते हैं। हम राजनीति से दूर हैं इसका एक घमंड भी वे अनजाने में या समझ बूझकर पालतें रहते हैं। ऐसे में अर्थनीति तो उनके लिए बहुत ही दूर की या बेकाम की बात होती है। ये बातें हमारी समझ में आएं तब तक मानवीय समाज और निसर्ग दोनों का बहुत बड़ा ह्रास हो चुका होता है।

अधिक स्पष्ट कर दूँ कि एक व्यक्ति मरीज की सेवा करता है पर उसका लक्ष्य साफ़ न हो तो वह केवल सेवा का काम हो जाएगा, उद्देश्य प्रशंसा या पुण्य प्राप्ति हो जाएगी, पाप से कमाया धन व्यक्ति पुण्य के लिए दान करें और उससे सेवा कार्य की निर्मिती हो तो वह शांतिपूर्ण, सहजीवन के लिए निरुपयोगी बात होगी। उसमें साध्य के लिए अधिकतम प्रमाण में साधन के शुद्ध होने की जरूरत नहीं रहेगी। पर वही काम समाज से अंधश्रद्धा हटे और समाज इस पर सोचकर कृति करे, इसमें संशोधन कर इजाफा करे जिससे समाज में आपसी जीवन सुसंवादात्मक हो, अगर ऐसा है तो उसका उद्देश्य साफ़ होता है। इसी के साथ वह समता, न्याय, भाईचारा, शांति आदि मूल्यों पर आधारित समाज निर्मिती के प्रयास को जोड़कर करता है तो लक्ष्य स्पष्ट है। लक्ष्य के साथ उद्देश्य में व्यक्ति के जीवन में उन मूल्यों का आचरण मोक्ष प्राप्ति या निरिच्छ जीवन पूर्णाहुति के लिए करें और वे मूल्य उसके जीवन से झलकते हुए लोगों को भी अधिकतम साफ़ दिखाई दे तो उद्देश्य भी सही माना जाएगा। यह जरूरी है की उद्देश्य में अंतिम व्यक्ति रहे यह उनका आग्रह था।

गाँधी तीर्थ पर आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान मंच साझा करते हुए डॉ. मेहता, धर्माधिकारी जी, डॉ. आर्यरत्ने, डॉ. भवरलाल जैन तथा तुषार गाँधी

अगर हम इन जीवन मूल्यों को और व्यक्ति के रचनात्मक काम को जोड़कर देखते हैं तो ही व्यक्ति का हर काम सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक पहलुओं से जुड़ा है। जीवन मूल्य ही पता न हो या अलग हो तो वह व्यक्ति उसके सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक पहलुओं को समझेगा नहीं केवल सेवा भाव से वह किए जाएगा जिससे समाज में किसी भी प्रकार का बदलाव नहीं होगा।

इसलिए रचनात्मक काम का ध्येय और उद्देश्य साफ़ हो, व्यक्ति का आचरण भी उसके अनुरूप रहे यह देखना जरूरी है। यही उनके जीवन से शिक्षा मिलती है।

१. उनका पहला नजरिया है कि किसी भी रचनात्मक काम को करने के लिए उसका लक्ष्य या ध्येय, उद्देश्य और कृति तथा जीवन में मेल हो।

२. दूसरा दृष्टिकोण है कि रचनात्मक काम करने वाले को हमेशा स्व–अध्ययन, चिंतन और सहमना मित्रों के साथ विमर्श अर्थात् मंथन करना चाहिए।

३. तीसरी बात यह है कि अपने हर कृति के सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक पहलुओं को अपने लक्ष्य के परिपेक्ष्य में समझना होगा। तभी साधन शुद्धि की बात हम समझ पाएंगे, जो शांतिपूर्ण सहजीवन के लिए यह जरूरी भी है।

४. चौथी बात वे कहते और करते थे कि हर कार्यकर्ता को लिखते रहना चाहिए। आज की जुबान में जिसे दस्तावेजीकरण कहते हैं वह अत्यंत जरूरी है। हम देखते हैं कि खासकर १९६७ के बाद से गाँधीजनों में इसकी बहुत शिथिलता पाई जाती है।

५. उपरोक्त तीनों बातों के लिए वे पूर्व कथनों से हर बात के लिए संदर्भ ढूंढकर बताते थे और फिर उस बात को अपने अनुभव तथा कृति को जोड़कर रखते थे। इसे आप विनय ही कह सकते हैं। नम्रता व्यवहार में दिखाई देने वाली चीज है पर विनय तो भीतर का भाव है। उसमें संपूर्ण कृतज्ञता, श्रद्धा और करुणा होती है।

सूत्र रूप में यदि कहना हो तो धर्माधिकारी जी के अनुसार गाँधीजी के मुलमंत्र में अंतिम व्यक्ति और कुदरत के दोहन (शोषण नहीं) की बात कही गयी हैं।

– डॉ. सुगन बरंठ

अध्यक्ष, नई तालीम समिति, वर्धा

◆◆◆

Dadaji's unstinting commitment

An enduring inspiration for the GRF

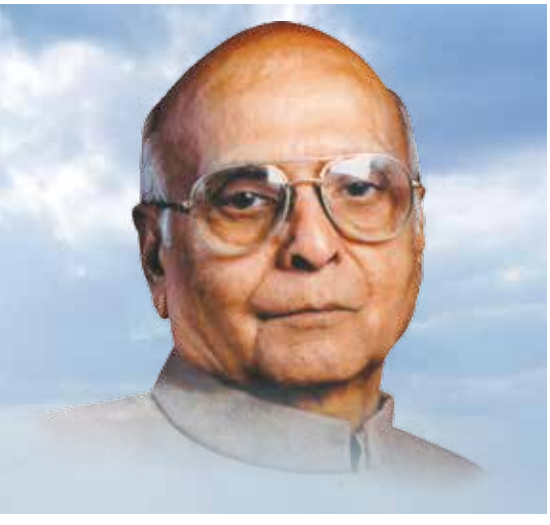

I had the privilege to personally meet Justice Dr. Chandrashekhar S. Dharmadhikari after the last rites had been performed for our charismatic founder of the Gandhi Teerth. The intensity of Dadaji's distress rendered explicit the deep emotional affinity he shared with and experienced for Bade Bhau. Thanks to his extraordinary feeling of kinship, and despite being completely shaken by the latter's sudden demise, as a preeminent Gandhian stalwart, Dadaji solemnly pledged his absolute commitment towards strengthening Bade Bhau's visionary project of Gandhi Teerth or Gandhi Research Foundation. Dharmadhikari ji considered this institution the ideal venue and instrument for promoting the Gandhian legacy to inspire, in particular, the present and future generations in India and the global arena. Dadaji's pledge has inspired us, the GRF team, to unstintingly dedicate ourselves towards transforming the Gandhi Teerth into a vibrant vehicle for propagating Gandhian practice and values in today's world.

Prof. Gita Dharampal,

Gandhi Research Foundation, Jalgaon

◆◆◆

Justice Dharmadhikari appreciated the induction of a young leader into the GRF. Smt. Ambika Jain's first meeting with Dadaji

Invoking
Justice Dharmadhikari's legacy for the GRF

I have done a B.A. LLB (Hons.) from Jindal Global Law School, Sonipat. After graduation, worked with a senior lawyer at Rajasthan High Court, Jaipur. Post my wedding I moved to Jalgaon and became part of the Jain family. After I was given an orientation of the various businesses and social initiatives that are being carried out by Jain Irrigation Ltd., I decided to work at the Gandhi Research Foundation (GRF). I was fascinated by Gandhiji's idea of 'Gram Swaraj' after seeing the interactive museum – Khoj Gandhiji Ki. Even though I had no background in Gandhian philosophy, I was keen to contribute in whatever way I could as I have always been passionate about social impact work. Especially the late chairman of GRF, Shri Dharmadhikariji was happy to see that I had shown interest in working for the Foundation. He motivated me to read more books on and by Gandhiji so as to understand his ideas in depth and how they can be implemented and made more relevant for the young generation. He wanted me to continuously explore ideas on how the GRF can be promoted and make the Gandhian principles work in practical reality. He had suggested to make "Khoj Gandhiji Ki" our in-house magazine to be published monthly rather than quarterly and I am happy to express that since January 2019 we have been publishing the magazine monthly. He was happy to know that we have launched the BaBapu150 program where we plan to make the villages self-sustainable by identifying the core problems and advising appropriate solutions. This program has been a huge step forward towards the idea of 'Gram Swaraj', where we make sure that the young generation of the local village actively participates in the program as we want them to lead their villages in the future. Dharmadhikariji had a lasting impression on me as he worked tirelessly throughout his life for women's empowerment. He believed that women should be given equal opportunities in all aspects of life. Thus, he encouraged me to involve more women in various activities of GRF. During his last address to the Board of the Gandhi Research Foundation, at Jain Hills, he spent time elaborating on the objectives of the Foundation and the great responsibility of the young generation in taking the legacy of the Bade Bhau forward.

In this vein, I want to explore further on how Gandhian ideas can be reinvented in today's time, specifically for young citizens and how they can help people in rural areas of India. I also want to promote this model of development so that it can be adopted in other developing nations around the world.

Smt. Ambika A. Jain,
Gandhi Research Foundation, Jalgaon

◆◆◆

Justice Dharmadhikari at a women's campaign against female feticide, in 2010. Sharing the dais are Mrs. Jyoti Jain, Mrs. Smita Wagh, Mrs. Bharti Sonawane and Mrs. Vasanti Dighe.

गाँधी तीर्थ से...

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक डॉ. भवरलालजी जैन एक उमदा सामाजिक व्यवसायकर्ता थे। प्यार से सभी लोग आपको बड़े भाऊ कहते थे। अपने जीवन के दौरान भाऊ ने जिन अप्रतिम संस्थाओं का निर्माण किया है उनमें से एक है, 'गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन'। किसी एक व्यक्ति के सम्मान में समर्पित ऐसी विश्व की यह सबसे विशाल संस्था है। यहाँ गाँधीजी एवं उनके जीवन को सुसंवादात्मक संग्रहालय के रूप में प्रदर्शित करने के अलावा यहाँ आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षण वर्गों में छात्रों पर गाँधीजी के अहिंसा, स्वावलंबी, आत्मोद्धारक ग्रामविकास ऐसे जीवन मूल्यों के संस्कार किए जाते हैं। बा–बापू१५० के अंतर्गत संस्था के क्रियाकलाप देहातों में भी प्रसारित किए जाते हैं। विशेष ध्यान देने लायक बात यह है कि आज़ादी के बाद किसी भी एक व्यक्ति ने गाँधीजी पर इतनी विराट परियोजना कार्यान्वित नहीं की है जो उनके विचारों और सपनों को भविष्य की कई पीढ़ियों तक ले जा सके। ऐसी क्या प्रेरणा रही की बड़े भाऊ ने विराट गाँधी तीर्थ स्मारक का निर्माण कर दिया? आइए उनके द्वारा लिखी गई भूमिका को देखें।

–संपादक

डॉ. भवरलाल जैन

भगवान को किसीं ने नही देखा है। परंतु उनके सितारे अलग–अलग समय पर जरूर दिखते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब–जब अन्याय, अत्याचार का अतिरेक हो जाता है, तब–तब ऐसा कोई देवदूत आता है, जो अन्याय का निवारण करने में अपने आपको झोक देता है। जब पूर्वी संस्कृति व सभ्यता का अंत और पश्चिमी संस्कृति का उदय हो रहा था, ऐसे समय में समाज, संस्कृति, सभ्यता का सही मार्ग बताने वाला मार्गदर्शक गाँधीजी के रूप में इस दुनिया को मिला। अपने जीवन का आरंभ गाँधीजी ने इंग्लैंड में उच्च शिक्षा प्राप्त करने तथा उसके बाद दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर होने वाले अत्याचारों को मिटाने के लिए किया। ठीक वही संस्कृति, जिसने भारत पर कब्जा किया था, दक्षिण अफ्रीका में भी मौजूद थी और जैसे भारत में अन्याय, अपहरण का सिलसिला जारी था, उससे भी कहीं अधिक मात्रा में दक्षिण अफ्रीका में चल रहा था। इसलिए गाँधीजी ने अपने जीवन के करीब २१ साल दक्षिण अफ्रीका में लगाए। यहीं पर उन्होंने अपने जीवन का मूलभूत दृष्टिकोण हासिल किया। हम अन्याय का निवारण कर सकते हैं और साथ में अन्यायी के प्रति प्रेमभाव भी रख सकते हैं, इस बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्धांत को दुनिया के सामने रखा।

गाँधी तीर्थ पर रचनात्मक कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए डॉ. भवरलाल जैन तथा न्या. धर्माधिकारी

मेरा अपना जीवन, पहले से ही गाँधी विचारों, उनके कामों और तौर–तरीकों से प्रभावित रहा है। वैसे जैन धर्म में जन्म लेने के कारण सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकांत सिद्धांत, यह सब मुझे वसीयत के रूप में मिले थे। गाँधीजी पर भी भगवान महावीर का व्यापक प्रभाव था। खान–पान, आध्यात्मिकता, प्रेम–भावना, मीठी बोली, जैसी वाणी वैसी करनी जैसे व्यक्तित्व वाले महापुरुष को मैं खोज रहा था। जब इन सब गुणों का एक सागर सा संचय एक जगह दिखा, तो मैं और भी भाव–विभोर हो गया।

बहुत वर्षों से एक धुंधली सी तीव्र इच्छा थी कि, मैं गाँधीजी की स्मृति में कुछ ऐसा काम करूँ, जिससे उनके जीवन, विचारों और कार्यों की स्मृति को चिरंतन कर सकूँ। यह करने में संपत्ति का उपयोग तो होना ही था। तीन–चार दशकों से प्रामाणिकता के साथ मैं संपत्ति जोडता रहा और साथ–साथ अपनी इस अभिलाषा को खाद–पानी देता रहा। जब भी जीवन में कठिन मोड़ पर अपने आप को खड़ा पाता, गाँधीजी के जीवन में झाँक कर देखने की कोशिश करता। सिलसिला बहुत लंबा चला और छः–सात साल पहले मणिभवन में ऐसी प्रेरणा हुई कि, इस काम को अब मूर्त रूप प्रदान करना जरूरी है। मैं देश के कुछ प्रमुख शहरों में, जहाँ गाँधीजी की साहित्य सामग्री का संचय था, भंडार था, वहाँ जाकर उनसे अपना संबंध जोड़ा, कुछ अनुभव हुआ। उसी वक्त मैंने गाँधीजी के साहित्य को संकलित करने का दृढ निश्चय किया।

साबरमती, वर्धा, दिल्ली, आदि जगहों पर गया, जो गाँधीजी के पवित्र स्पर्श से पुनीत हुई थी। २००४ की शुरुआत में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय

संग्रहालय में जितना महत्त्वपूर्ण साहित्य गाँधीजी द्वारा या गाँधीजी पर लिखा गया था, वहाँ मौजूद था, उसे खरीदने का सिलसिला शुरू किया। उसके पश्चात् जैसे–जैसे धुन मिलती गई, प्रभु की प्रेरणा से नये–नये विचार, इस संकल्प को कार्यान्वित करने के लिए आते गए, वैसे–वैसे मैं आगे बढता गया।

यहाँ आते वक्त दिल में कुछ लेकर मत आइए। यहाँ आकर जो कुछ आप अनुभव करें, वह ले जाइए। इतना ही वह प्रसाद है। इसके अलावा यहाँ कुछ नहीं है। यहाँ पक्षी होंगे, एक शांत वातावरण होगा और यहाँ बैठने के बाद आपके मन में जो भी विचार होंगे, वे शुद्ध ही हो जाएँगे।

पर सभी के मन में एक प्रश्न सताता है, विशेष करके गाँधीवादियों के मन में, कि इस व्यापारी या उद्योगपति को गाँधीजी का ऐसा स्मारक बनाने की कल्पना कैसे सूझी? क्या कारण है? कुछ तो होना चाहिए? मतलब उनके मन में शंका है कि, इसके पीछे कुछ तो होना चाहिए? मतलब इसको बाजारी रूप मिलेगा! ऐसे अनेक प्रश्न लोगों के मनों में होते हैं। वे प्रश्न लोग मुझसे नहीं पूछते हैं। पर वो होता है सभी के दिल में, इस बारे में मुझे कोई शंका नहीं होती। मेरा यही कहना है कि, आदमी की तरफ क्या देखते हो, उसके काम की तरफ देखो।

गाँधीजी ने आदमियों की तरफ देखकर यह आंदोलन चलाने का ठहराया होता, तो कुछ नहीं हो पाता। जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभभाई पटेल को देखिए – एक दक्षिणी ध्रुव और दूसरा उत्तरी ध्रुव। ऐसी परिस्थिति थी। अपने जीवन में हर पल इस तरह के व्यक्तियों से काम लेने का संदर्भ गाँधीजी के जीवन में आया। उन्होंने स्वयं के आचरण से, स्वयं के चरित्र से, सभी के दिल जीत लिए। इस मंदिर में पुजारी नियुक्त करने के लिए किसी प्रकार का कोई स्पष्टीकरण न देते हुए न्यायमूर्ति के पास चले गए, उनसे कहा साहब, आप इस गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के चेयरमैन का पद स्वीकारें, यह हमारी दिली इच्छा है और यही विनती आपसे मैं करने आया हूँ। अंततः उन्होंने मेरे निवेदन को स्वीकार कर लिया।

कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि, गाँधीजी को पैसों से क्या मतलब, वे तो महात्मा थे। पर मुझे लगता है कि, पैसों से जितना गाँधीजी का संबंध आया, उतना किसी अन्य नेता का संबंध नहीं आया। अन्य किसी नेता को इतने पैसे मिलते ही नहीं, पर गाँधीजी को मिले। वे पैसे इकट्ठा करने के लिए अपने चश्मों की नीलामी करते, अपनी चप्पलों की नीलामी करते, मिलने वाली भेंट वस्तुओं की नीलामी करते रहते थे। एक बार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को अपने आश्रम की व्यवस्था के लिए पैसों की जरूरत महसूस हुई, तो वे दिल्ली आये और पैसों के इंतजाम के लिए खुद नाटक करना चाहते थे। यह बात जब गाँधीजी को पता चली, तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। इतने बड़े आदमी को पचास हजार रुपये के लिए दिल्ली नाटक करने आना पड़ रहा है। गाँधीजी जैसे व्यक्ति को यह बात नहीं जंची। उन्होंने अपने सेक्रेटरी को बुलाया और कहा कि, गुरुदेव को पैसों के इंतजाम के लिए यहाँ आना पड रहा है। क्या तुम पचास हजार रुपये

गाँधी तीर्थ के संस्थापक डॉ. भवरलाल जैन

विश्व महिला दिन के अवसर पर महिला समूह को संबोधित कर जीवन के पदार्थ मूल्य प्रस्तुत करते डॉ. भवरलाल जैन

का इंतजाम नहीं कर सकते हो। उन्होंने बिरला जी को फोन किया और बिरला जी ने पचास हजार का ड्राफ्ट भेज दिया। इन सबका रिकार्ड है। मारवाडी के यहाँ पैसों का रिकार्ड रखना बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इस प्रकार गाँधीजी ने पैसे भेज दिये और टैगोर को दिल्ली आने और खुद नाटक करने की जरूरत नहीं पड़ी।

उन्होंने इतनी बड़ी क्रांति की। उसे करने में पैसों की जरूरत तो पड़ी ही होगी और उन्होंने बहुत सा पैसा आम जनता से इकट्ठा किया होगा। आँखों में आँसू आ जाएँ, ऐसे प्रसंग हैं। वह फंड उन्होंने कैसे खडे किए। कोई छोटी लड़की, कोई विधवा औरत अपने शरीर पर रहने वाले गहने हँसते-हँसते गाँधीजी को सौंप दिये। ऐसी अनेक घटनायें हैं। इसलिए यह एक स्वतंत्र संशोधन का विषय है। इस आदमी को पैसा खड़ा करने में कितनी दिक्कत आई होगी? उन्होंने कैसे पैसा खड़ा किया होगा? किसी को नहीं मालूम। उन्हें न धनवानों से प्रेम था और न पैसों में आसक्ति थी। सितम्बर १९४४ में गाँधी-जिन्ना वार्ता के समय उन्होंने साध्वी उज्ज्वला जी महाराज से भी लगातार १९ दिनों तक विचार-विमर्श किया। गाँधीजी ने साध्वी जी से एक प्रश्न किया कि, आपको हमारे हाथ का अन्न चलेगा? साध्वी जी ने कहा कि, आप ऐसा क्यों सोच रहे हैं? जो शाकाहारी है, जिसे कोई लालच नहीं है। उसके हाथ का खाने में कोई मनाही नहीं है। बिरला जी भी वहीं खड़े थे। उन्होंने दूसरा प्रश्न किया कि, धन और धनवान में कौन बुरा है? गाँधीजी ने उत्तर दिया कि, धनवान को बुरा तो कह ही नहीं सकते। धनवान के घर में ही रह रहा हूँ और साध्वी जी आप भी किसी धनवान के घर में ही रह रही हैं। धन तो लक्ष्मी है, वो तो देवी है। उनको बुरा कह कर कैसे चलेगा? धन तो बुरा हो ही नहीं सकता। बशर्ते धन के प्रति किसी प्रकार की आसक्ति न हो। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि, गाँधीजी ने इतना पैसा खड़ा किया, किंतु उनको धन से किसी प्रकार की आसक्ति नहीं थी।

गाँधी तीर्थ निर्माण कार्य अवलोकन के दौरान डॉ. भवरलाल जैन तथा तुषार गाँधी

मुझे ऐसा लगता है कि, गाँधीजी ने जीवन की हर छोटी-मोटी प्रवृत्तियों का किसी न किसी रूप में प्रयोग किया है। देश के लिए उनका उपयोग होना चाहिए। मेरी तो यही अपेक्षा है कि, गाँधीजी की प्रवृत्तियों के माध्यम से देश और समाज का कल्याण करूँ। मुझे ऐसा भी लगता है कि, सिर्फ मानवों के लिए ही नहीं, पशु-पक्षियों के लिए बहुत कुछ करूँ। इसके लिए मेरे परिवार के हर सदस्य का पूरा सहयोग मिलता है। अब यहाँ हम जो निर्माण कर रहे हैं, वे सब हमारे लड़के देख रहे हैं। मेरे नाती-पोते भी देख रहे हैं। वे मुझे देखकर और इस तीर्थ को देखकर गाँधीजी के बारे में पूँछते भी रहते हैं। इनमें गाँधी दर्शन का प्रभाव पड़े, यही मेरी इच्छा है।

मुझे यह सब विरासत में मिला है। माता-पिता पढ़े-लिखे नहीं थे। इसीलिए कोई आधुनिक शौक भी उनमें नहीं था। वो पुराने खयालों के ही रहे। इसलिए उनके विचारों से हमें कुछ नहीं मिल पाया। जो कुछ मिला, उनके आचारों से मिला। आचारों से जो संस्कार मिलते हैं, वे बहुत गहराई तक जाते हैं। इसी प्रकार के संस्कार गाँधीजी को भी उनके माता-पिता से मिले थे। उनके जीवन में अनेक अवसर आए, जब इन संस्कारों ने उनकी मदद की।

विश्व में जैसे-जैसे हिंसा, तानाशाही, लालच और भौतिकता की तरफ खिंचाव बढ़ता रहेगा, उसी तरह और ठीक उनसे भी ज्यादा, विश्व में गाँधीजी के विचार, काम तथा संदेश युवाओं में और भी उभर कर उठेगा। इस विश्वास के साथ एक विश्वस्तरीय स्मारक का निर्माण हो, इस भावना की चपेट में आया। उसका ही फलस्वरूप है, गाँधी तीर्थ का निर्माण। बस आप सबकी मदद, गाँधीजी की प्रेरणा से उनका संदेश जरूरतमंदों तक पहुँचा सकूँ, यही एक भावना है। जीवन के इस संध्याकाल में मेरे अपने दिल की यही भूमिका है। इसके साथ आपसे अनुरोध है, हो सके जहाँ तक, इस मंगल रचना में, आप भी सहयोगी बनें, यही मेरी अंतरात्मा की आवाज है।

◆◆◆

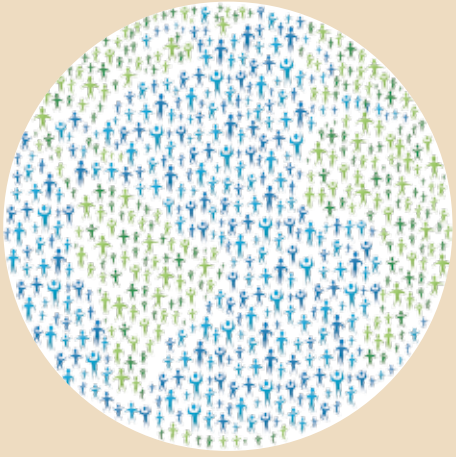

विश्व नागरिकता

जोड़ दी हमने प्रित, जगत् संग जोड़ी हमने प्रित
चारों दिशा हैं बंधु हमारे, सभी हमारे मीत
मैत्री ही की शक्ति सच्ची प्रकटत पूरण रीत।।

वाद-विवाद को पंच मिटावे संवादिता में जीत
वैर मिटायें, द्वेष मिटायें चाहे सब का हित।।

फौज के खर्च विनास से मोड़े विकास को अर्पित
सत्य के खातिर साहस कल ले भले जगत विपरीत।।

प्रेम की पावक लौ में कूदें बिना हुए भयभीत
विश्वसभा में मधुर सुनायें विश्वशांति संगीत।।

– नारायण देसाई

गाँधी कथा... गीत से साभार

फाऊण्डेशन की गतिविधियां

मुल्य शिक्षा कार्यक्रम

शिक्षा प्राप्त करने की कोई उम्र नहीं होती और न उनके लिए कोई विशेष जगह होती है यह तो जीवनपर्यंत चलने वाली निरंतर प्रक्रिया है। फाउण्डेशन इसी विचारधारा को मानता है। इस आधार पर बा–बापू १५० के अंतर्गत चयनित गाँवों में मूल्य शिक्षा से संबंधित विशेष कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम के द्वारा बच्चों के समग्र विकास के लिए उन्हें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक रूप से विशेष अभिविन्यास करने का प्रयास किया गया। १५ नवम्बर से १५ दिसम्बर २०१९ तक जलगाँव जिला के १३ गाँवों में चले इस कार्य के लिए विभिन्न तरह के माध्यमों का प्रयोग किया गया जैसे कि खेल–कूद, कठपुतलियों का कार्यक्रम, स्वच्छता के साधन, वृक्षारोपण, कागज से कला और शिल्प आदि।

स्वच्छता का संस्कार

बच्चे खुद की स्वच्छता के प्रति इतने जागरूक नहीं रहते हैं, इसलिए वे बीमार होने की संभावना में घिरे रहते हैं। कभी पेट खराब होने की समस्या, कभी दाँतों में दर्द की समस्या तो कभी उल्टी या पेचिश की समस्या, न जाने कितनी समस्या से वे जूझते रहते हैं। बच्चों का शारीरिक आरोग्य अच्छा होगा तभी उनका मानसिक आरोग्य अच्छा बनेगा। एक सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण के लिए दोनों तरह के आरोग्य को प्राधान्य देना आवश्यक बन जाता है। मूल्य शिक्षा कार्यक्रम के दौरान हमने निम्न प्रकार के माध्यमों से बच्चों को आरोग्य की शिक्षा देने का प्रयास किया है।

कम पानी में हाथ की सफाई

अधिकतर बच्चे भोजन से पहले अपने हाथ ठीक तरह से नहीं धोते हैं। हमारे कार्यकर्ताओं ने अभिनय के माध्यम से कम पानी में अच्छी तरह से हाथ धोने के महत्त्व को बच्चों के सामने साझा किए। कई ऐसे मॉडेल है जिससे हम कम पानी में अच्छी तरह से हाथ धो सकते हैं। हमारी टीम ने प्लास्टिक की बॉटल के प्रयोग के जरिए हाथ धोने का एक मॉडेल तैयार किया है

नैतिक मूल्य पर ही देश प्रगति करेगा, ना दुश्मनी होगी ना भेदभाव होगा, यही हमारे देश का भविष्य होगा।

जिसमें कम पानी में अच्छी तरह से हाथ धोया जा सकता है। इस प्रयोग को बच्चों के साथ साझा कर यह कैसे बनाया जा सकता है इस संदर्भ में उनको प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

कचरे का निकास

इस कार्यक्रम के दौरान हर एक स्कूल में दो कचरा पेटी प्रदान की गई, जिसमें एक सूखा कचरा और एक गीला कचरा के लिए है। इस कचरा पेटी की खासियत यह है कि स्थानीय संसाधनों से प्राप्त सामग्री से तैयार की गई है। हर एक स्कूल में छात्रों की एक जांच कमेटी बनाई गई है जो इस कचरा पेटी को समय पर खाली करना तथा उनको संभालने का कार्य देखेगी। इसके साथ कचरा ही निर्माण ना हो इस बात पर गहराई से काम करने का संकल्प रखा।

इन बच्चों के संग ज़माना, है तैयार बदलने को...

कचरे के व्यवस्थापन के संदर्भ में गीला कचरा और सूखा कचरा से कंपोस्ट खाद के लिए लायक कचरा को केंचुआ खाद के प्रयोग में लाया जा रहा है। दोपहर के भोजन का झूठा, परिसर में होने वाले कचरे का योग्य निकास क्या हो सकता है इस विषय पर सोचते हुए केंचुआ खाद तक पहुंचे और हर एक स्कूल में एक-एक यूनिट केंचुआ खाद के लिए एक मॉडेल तैयार किया गया। इससे कचरे का योग्य निकास तो होगा ही साथ ही साथ परिसर में स्थित पेड़-पौधों के लिए खाद भी मिल जाऐगी।

वृक्षारोपण

सभी स्कूल के परिसर में पौधे लगाए गए, पौधे की सुरक्षा के लिए पर्यावरण में से प्राप्त टहनियों का प्रयोग किया गया। साथ ही उनको संभालने के लिए छात्रों को एक-एक पौधे की जिम्मेदारी बांटी गई है। इससे बच्चों में जिम्मेदारी का एहसास आएगा और परिसर को समृद्ध बनाने में मदद प्राप्त होगी।

चलो साथियों, खूब पेड़ लगाते हैं,
इस मातृभूमि का मान बढ़ाते है...

चित्रकला और कागज कला

बच्चों को हम जैसा ढालने का प्रयास करते हैं वैसा वे बनते हैं, बचपन काफी अमूल्य है उसे बोझ के तले दबाने की बजाए इसे स्वतंत्र रूप से खिलने देना चाहिए। इसी स्थिति में बच्चों की प्रतिभा उभरकर सामने आती हैं। हमारे इर्दगिर्द कई 'वेस्ट' सामग्री मिल जाएगी जिसमें से हम 'बेस्ट' वस्तु या कला तैयार कर सकते हैं। इसी मंत्र के साथ पुराने समाचार पत्रों के द्वारा बच्चों को कला सिखाने का जज्बा हमारे कार्यकर्ताओं को मिल गया और इस मूल्य शिक्षा कार्यक्रम को चार चाँद लगा दिया। फिर तो बच्चों ने अपने हुनर के आधार पर कागज में से टोपी, रंगबिरंगी घूमने वाले चक्र, तितलियां आदि बनाने लगे। इस कार्य के लिए आठ से दस छात्रों की टीम बनाकर कुछ कागज और चित्रकला के रंग सामूहिक रूप से दिए गए, बच्चों ने मिल जुलकर, सहकार व समूह भावना से इसका उपयोग किया।

बस, फिर तो कहना ही क्या जो सबसे चंचल और नटखट बच्चे थे उनको इतना मशगूल और एक ही जगह पर कागज की सामग्री बनाते देख शिक्षकों की खुशी न समाई! यह पदार्थ पाठ छात्रों के साथ-साथ शिक्षक मित्रों के लिए भी अलग अनुभव बना।

हार न मानने का ज़ज्बा तुम्हें उठाएगा, तुम्हारा अडिग हौसला तुम्हें बढ़ाएगा - कागज की कला में मग्न बच्चें

खेलकूद

आज के इस मल्टीमीडिया के दौर में कई खेल हमारे बीच से विदा हो रहे हैं। मूल्य शिक्षा कार्यक्रम के दौरान विभिन्न तरह के खेलों के माध्यम से बच्चों में सामाजिक मूल्य तथा खेल भावना की चेतना को जगाने का प्रयास किया है। बच्चे खेल तो खेलते हैं पर सामान्यतः कुछ ही खेल उनके पास मौजूद होते हैं। इस कार्यक्रम के दौरान कई ऐसे खेल बच्चों के बीच प्रस्तुत कर पाए जो उनके लिए बिलकुल नए थे। बिना साधन सामग्री के भी कई खेल खेला जा सकता है यह बात बच्चों के लिए नई रही है।

पपेट शोः

आज के संदर्भ में बच्चों को सबसे अधिक एनिमेशन चरित्र पसंद है। हम बच्चों तक जो भी बात या संदेश पहुँचाना चाहते हैं अगर वह एनिमेशन के ढांचे में है तो उनकी असरकारकता अधिक बढ़ जाएगी। हमारी टीम ने बच्चों के चहेते कार्टून चरित्रों में स्वच्छता, व्यक्तिगत तथा सामुदायिक आरोग्य, भाईचारा, संगठन जैसे तत्त्वों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

मूल्य शिक्षा के इन्हीं पदार्थ तत्त्वों को कठपुतलियों (पपेट शो) के द्वारा गाँवों में प्रस्तुत करने का प्रयास छात्रों के लिए नया नजरिया बना।

१५ नवम्बर से १५ दिसम्बर २०१९ के दौरान मूल्य शिक्षा इस कार्यक्रम को जलगाँव जिला के वसंतवाडी तांडा, रामदेववाडी, जलके, कुर्हाडदा, दापोरा, शेरी, बोरखेड़ा, टाकरखेड़ा, वैजनाथ, खर्ची बु., खर्जी खु., रवंजा बु. और धानोरा इन गाँवों में कार्यान्वित किया गया। इस कार्यक्रम में सभी गाँवों के मिलाकर कुल चौदह सो छात्र और करीब साठ शिक्षकों तक नैतिक मूल्य शिक्षा के विचार को पहुँचाया गया।।

पपेट शो के द्वारा मूल्य शिक्षा की प्रस्तुती

मूल्य शिक्षा अभियान के दौरान खर्ची गाँव की विद्यालय के खुशखुशाल बच्चें एवं फाउण्डेशन के कार्यकर्ता

गाँधी तीर्थ - चित्र प्रदर्शनी का मुंबई में प्रदर्शन

चित्रकार आनंद पाटील

गाँधी तीर्थ संग्रहालय पर आधारित कलात्मक व सुंदर चित्र की प्रदर्शनी मुंबई स्थित आर्ट प्लाझा गॅलरी में प्रदर्शित की गई। जैन इरिगेशन के सहकारी आनंद पाटील के द्वारा निर्मित इस कलाकृति में गाँधी तीर्थ के प्राकृतिक व मनोरम्य वातावरण का दर्शन हो रहा है। 'गाँधी तीर्थ' यह महात्मा गाँधीजी के विचार प्रचार-प्रसार का केंद्र है। गाँधी विचारों से प्रेरित होकर कलाकार आनंद पाटील ने यह चित्र साकार किए हैं। चित्र द्वारा गाँधी तीर्थ की अनुभूति हो सके इसलिए गाँधी तीर्थ परिसर में बैठकर आनंद पाटील ने यह चित्र साकार किए। २५ नवम्बर से १ दिसम्बर तक आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन वरिष्ठ लेखक आनंद गुप्ते के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर अपने विचार साझा करते हुए आनंद गुप्ते ने कहा कि निसर्ग से वास्तु कैसे समरूप होती है इसकी अनुभूति इस चित्र प्रदर्शनी के अवलोकन द्वारा हूई। उद्घाटन अवसर पर सुप्रसिद्ध चित्रकार सुहास बहुलकर, सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट के अधिव्याख्याता जॉन ड़ग्लस उपस्थित थे। महात्मा गाँधी के विचारों की समीपता निर्माण करने वाले 'गाँधी तीर्थ' चित्र प्रदर्शनी स्थल पर अनेक कलाकारों ने भेंट दी।

आनंद पाटील के द्वारा साकार किए गए कुल १८ चित्र प्रदर्शनी स्थल पर लगाए गए थे, इस प्रदर्शनी के दौरान तीन चित्रों को कॅनडा मॉट्रियाल निवासी पूजा साई ने खरीदे हैं।

गाँधी तीर्थ चित्र प्रदर्शनी के अवलोकन में मग्न मुलाकाती

बड़े भाऊ को समर्पित-रचनात्मक कृति

रवंजा गाँव में आयोजित स्वच्छता अभियान में कार्यरत फाउण्डेशन के कार्यकर्ता एवं छात्रगण

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संस्थापक श्रद्धेय भवरलाल जैन की जन्म जयंती पर हर साल फाउण्डेशन परिवार रचनात्मक कार्य करता है। इसी प्रणाली के आधार पर पिछले कुछ सालों के दौरान जलगाँव जिले के विभिन्न ग्रामीण भागों में अपना योगदान अर्पित कर कार्य किया है। उनमें कुर्हाडदा, जलके, रामदेववाडी, खर्ची, रवंजा जैसे गाँवों में स्वच्छता अभियान किया गया है। १२ दिसम्बर २०१९ के दिन डॉ. भवरलाल जैन की ८३ वीं जयंती मनाई गई है। इस अवसर पर गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं ने जलगाँव जिले के रवंजा खु. गाँव में संपूर्ण स्वच्छता अभियान कर इस दिन किए गए कार्य को बड़े भाऊ को अर्पित किया।

फाउण्डेशन के पचीस सहकारी तथा रवंजा गाँव के ग्रामजन स्वच्छता अभियान में जुड़कर गाँव के मुख्य रास्ते, पानी निकास की नालियां तथा बस स्टैंड परिसर तथा शाला परिसर को श्रमदान कर साफ किया।

इसके अतिरिक्त फाउण्डेशन की ओर से मूल्य शिक्षण के अंतर्गत स्कूल में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम किए गए। इस स्कूल में कक्षा १ से ४ तक के विद्यार्थियों ने फलों के पौधे लगाए तथा उसे ट्रीगार्ड से सुरक्षा प्रदान की गई। कचरे के निकास के संदर्भ में व्यवस्थापन करते हुए केंचुआ खाद का महत्त्व बताकर प्रत्यक्ष कृति के माध्यम से इसी स्कूल परिसर में बच्चों के द्वारा केंचुआ खाद का गड्ढा तैयार किया। वैयक्तिक स्वच्छता तथा सामुदायिक स्वच्छता की शिक्षा प्रदान कर शौचालय के महत्त्व को साझा किया। बाल गीत, कलाकृति, कागज से निर्मित विभिन्न सामग्री तथा रंगबिरंगी खिलौने बनाकर बच्चों में नैतिक मूल्य के बीज बोए। हमारे आरोग्य के संदर्भ में बात करते हुए खुराक की आदत में फैक्ट्री फूड और फार्म फूड की तुलनात्मक प्रस्तुति की गई। आखिर में कठपुतलियों के मंचन के द्वारा यह सभी तत्त्वों को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

फाउण्डेशन के सहकारीवृंद, गाँव के ग्रामजन तथा स्कूल के छात्रों के द्वारा किए गए इस कार्य में बड़े भाऊ की गाँधीविचार आधारित प्रेरणा के दर्शन हो रहे हैं। फाउण्डेशन परिवार अपने आपको भाग्यशाली समझता हैं कि वह आप जैसे व्यक्ति के बीच रहा और आपकी वाणी और वर्तन से गाँधी विचार को समझ पाया। आपकी जन्म जयंती पर हम सबकी ओर से एक छोटी सी कृति कृतज्ञता पूर्वक आपको अर्पित करते हैं।

A new book released: "Gandhi on Health"

"This book shows that Gandhi intended, 100 years ago, to become a professional British-trained M.D., that after abandoning that idea and criticizing Western medicine he practiced amateur healing for the rest of his life (sometimes with notable success), that he admired some Western-type doctors and would sometimes discard his own dogmas about health care, that he practiced palliative care (for Kasturba) and euthanasia(!), and that he foresaw that the right to subsidized health care could be maintained only if the people perform their corresponding duty of taking good care of themselves in terms of exercise, weight, hygiene etc...."

- **Prof. Mark Lindley,** USA
Author

To order copies, Please contact: info@gandhifoundation.net; M.: 9422775918

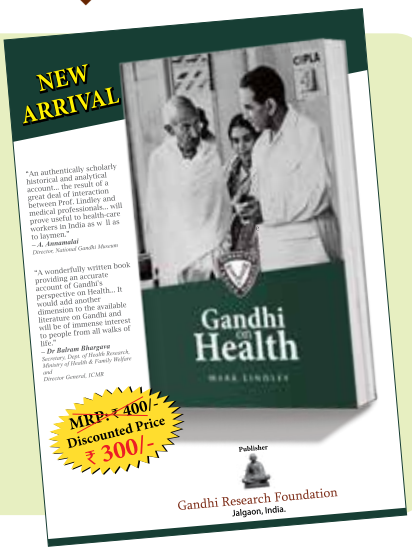

पाठकों के अभिमत

*'**खोज गाँधीजी की**' पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत*

– संपादक

(On Khoj Gandhiji Ki being bilingual) "Very good to have these, thank you. I liked the articles I could read (English). Dhanyawad."

***Michael Nagler,** USA*

.....

खोज गाँधीजी की मासिक पत्रिका का मैं नियमित वाचक हूँ। पत्रिका के लेख बहुत ही वैचारिक तथा शोधपूर्ण हैं। पत्रिका पढ़ने से गाँधीजी के तत्त्वज्ञान तथा कार्य के दर्शन होते हैं। जनवरी–नवम्बर २०१९ तक के सारे अंक मुझे बहुत अच्छे लगे। सभी अंक मेरे पास संग्रहित हैं। यह अंक नई पीढ़ियों के लिए प्रेरणारूप है जिसके पढ़ने से जीवन सफल बनाने की सही दिशा प्राप्त होती है। यह पत्रिका नागरिक, छात्र तथा समाज के सभी प्रकार के समूह के लिए दीपस्तंभ है।

***दिपक शिरसाट**, पीएच. डी. शोध छात्र, जामनेर*

.....

In the October - November 2019 issue, Ashwin Zala's poem "I am Gandhi Teerth" was superb. Each stanza is appealing. I hope he continues to write such impressive pieces.

The programme on the Mahatma by the differently-abled children was very inspiring. A very good theme indeed.

***D. K. Oza,** Chennai*

That the magazine is carrying Gandhiji's autobiography as a series, I'm sure, helps the readers to know the depth of his thought and practice. This assumes significance as people understand little about Gandhiji and his great life, and get easily carried away by rumours.

The 'Sustainability: Learning from Gandhiji's' article by the youngsters is good, and appreciable. It is necessary that GRF activities are given prominently in every issue.

I have a suggestion. The country is passing through challenging times, for good and otherwise too.

Khoj Gandhiji Ki may regularly publish articles, discussions and experiential narrations on Gandhiji's basic principles and the non-violence response he gave to practical problems such as socio economic disparity, inequality, unemployment and the plight of farmers, deterioration of agriculture, rural degradation and violent attack on women.

A discussion as well, could be initiated on these issues and over the systems Gandhiji had to handle such situations, and publish them. That will make the magazine contemporary in its treatment.

***Radha Bhatt,** Kausani, Uttarakhand*

.....

This is a sincere effort. The article about vinoba is very interesting.

Lokesh Jain

.....

It is very much informative and useful for us.

***Pushpa Motiyani,** Gujarat*

अनिकेत आमटे, सौ. समिक्षा आमटे, हेमलकसा, गडचिरोली ०२.१२.२०१९

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित 'खोज गाँधीजी की' संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

अध्यापक वृंद, के.सी.ई. इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी, जलगाँव ०४.१२.२०१९

महेश वर्मा, सुनिल मग्गीरवार, निदेशक, एअरपोर्ट अथोरिटी, जलगाँव. १२.१२.२०१९

गाँधी विचार संस्कार परीक्षा में सम्मिलित छात्र समूह, कर्नाटक राज्य, १३.१२.२०१९

डॉ. सत्यलक्ष्मी, निदेशक, नॅशनल इंस्टिट्यूट ऑफ नेचरोपैथी, पूना २७.१२.२०१९

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

मोहन से महात्मा – चित्र शृंखला–३२

स्वतंत्रता

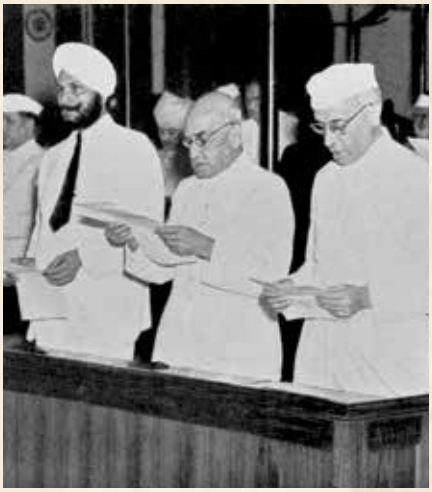

१४–१५ अगस्त १९४७ की आधी रात को पंडित जवाहरलाल नेहरू व अन्य भारत के स्वतंत्र होने की घोषणा के दस्तावेज को पढ़ते हुए।

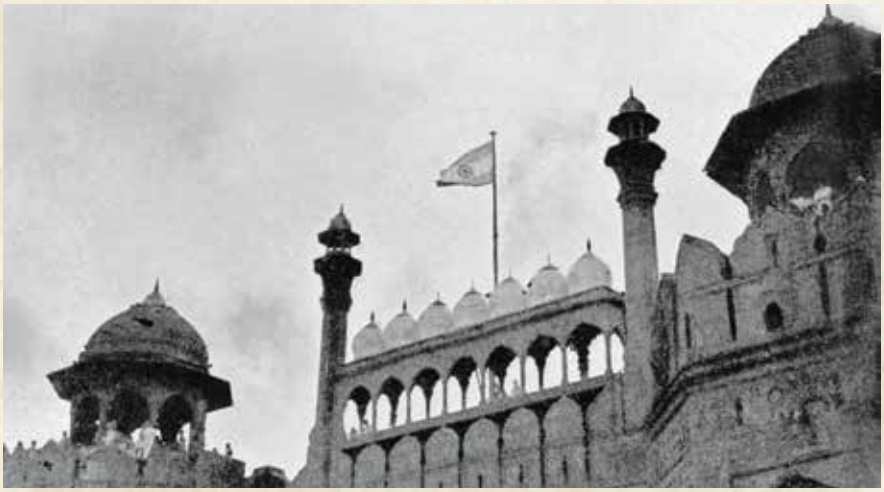

१४–१५ अगस्त १९४७ की आधी रात को भारत के आजाद होने की सूचना के दौरान लाल किले का दृश्य

दिन के दो बजे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के कुछ सदस्यों के साथ भेटवार्ता में गाँधीजी ने कहा कि, राजनैतिक कार्यकर्ताओं को चाहे वो कम्युनिस्ट हो अथवा समाजवादी, आज अपने सभी मतभेद भुला देना चाहिए और जो आजादी हासिल की गई है उसे मजबूत करने में मदद देनी चाहिए। क्या हम अपनी आजादी को खंड–खंड हो जाने देंगे? बड़े दु:ख कि बात यह है कि देश ने जिस शक्ति के साथ अग्रेंजो से लोहा लिया था, वह शक्ति हिंदू–मुस्लिम एकता स्थापना के मामले में लोगों में दिखाई नहीं दे रही है। उत्सव मनाने के बारे में गाँधीजी ने कहा:

''मैं इस हर्षोल्लास में, जो एक दुखद प्रयोजन है, कोई हिस्सा नहीं ले सकता।''

– महात्मा गाँधी, कलकत्ता, अगस्त १५,१९४७

At 2, there was an Interview with some members of the Communist Party of India to whom Gandhiji said that political workers, whether Communist or Socialist, must forget today all differences and help to consolidate the freedom which had been attained. Should we allow it to break into pieces? The tragedy was that the strength with which the country had fought against the British was failing them when it came to the establishment of Hindu-Muslim unity. With regard to the celebrations. Gandhiji said: "I can't afford to take part in this rejoicing, which is a sorry affair.. "

- Mahatma Gandhi, Calcutta, August 15, 1947

महात्मा गाँधी चरखे पर सुत कातते हुए, नई दिल्ली, १९४७

जिस समय दिल्ली के लाल किले पर १५ अगस्त १९४७ को स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा था, उस वक्त महात्मा गाँधी कोलकत्ता में हिंदू–मुस्लिम एकता के लिए प्रयत्न कर रहे थे।

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:

Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव–४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)

प्रकाशन: २ जनवरी, २०२०